

वीरान पड़ी जमीनों पर बड़े उद्योगों की फसल लहलहाने को तैयार

जेवर एयरपोर्ट : बड़ी परियोजनाओं को खूब मिली जमीन, एमएसएमई को आवंटन का इंतजार

अभिषेक गुप्ता

लखनऊ। जेवर में तो केवल एयरपोर्ट है... वास्तविक विकास व निवेश जेवर के आसपास की पंचायतों और तहसीलों में आया है। इनमें रवपुर नगर पंचायत, दनकौर, ज हां गी र पुर, विलासपुर और जेवर शामिल हैं।

मेडिकल डिवाइस पार्क, फिल्म सिटी, सेमीकंडक्टर पार्क, अपैरल पार्क जैसी बड़ी औद्योगिक परियोजनाएं इसी जगह हैं। ललितपुर में बनने वाले फार्मा हब के कारण यमुना सिटी के मेडिकल डिवाइस पार्क में केवल अनुसंधान केंद्र की

अपैरल पार्क, मेडिकल डिवाइस पार्क और ट्वाय सिटी जैसी बड़ी परियोजनाएं यीडा क्षेत्र में हैं। इनके शुरू होने से क्षेत्र की तस्वीर बदल जाएगी, लेकिन एमएसएमई सेक्टर को भी जमीन मिलनी चाहिए। यीडा को 250 एकड़ जमीन पर एमएसएमई पार्क का आवंटन दिया जा चुका है। अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है।

—सरबजीत सिंह, चेयरमैन, आईआईए, यीडा रीजन



जेवर की उड़ान
गांव से ग्लोबल हब
ग्राउंड रिपोर्ट

अनुमति दी गई है। ये परियोजनाएं गेम चेंजर साबित होंगी। वहीं, दूसरा पहलू यह भी है कि छोटे उद्यमियों के लिए यहां जमीन नहीं है।

जेवर और यमुना सिटी में घूमते हुए यहां तेजी से आकार लेती परियोजनाओं को करीब से देखा।

सेक्टर 28 में मेडिकल डिवाइस पार्क के लिए 350 एकड़ और फिल्म सिटी के लिए सेक्टर 21 में 1000 एकड़ भूमि आवंटित की गई है। पहले चरण के लिए करीब 230 एकड़ जमीन का आवंटन किया गया है। अपैरल पार्क सेक्टर 29 में 175 एकड़ जमीन पर बसेगा। ट्वाय सिटी के लिए सेक्टर 33 में 100 एकड़ जमीन मिली है।

ये सभी पार्क फिलहाल या तो खाली हैं या यहां खेती हो रही है। फिल्म सिटी के एक हिस्से में टीन या फ्लैक्स का बेरा बना था, जहां कुछ समय पहले फिल्म मॉम-2 की शूटिंग हुई थी। फिलहाल वहां परियों के अलावा कोई नहीं था। प्राधिकरण का दावा है कि अगले डेढ़ साल में यहां इकाइयां बस जाएंगी।

विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों का बन रहा गढ़

यमुना सिटी में देश-दुनिया के नामी विश्वविद्यालयों के बीच होड़ मची है। यहां एमडीआई गुरुग्राम, संविता एजुकेशनल ग्रुप, शास्त्र ग्रुप, मलेशिया की लिंकन यूनिवर्सिटीज और एक अमेरिकन एजुकेशनल ग्रुप ने आने की तैयारी की है। इसके लिए 50 से 250 एकड़ तक जमीन मांगी गई है। यमुना सिटी के सेक्टर 22 में संस्थानों के प्लॉट हैं। अब इस सेक्टर में जमीन काफी कम बची है। यमुना अथॉरिटी के सेक्टर 13 में जमीन खरीदकर विश्वविद्यालयों को दी जाएगी। यमुना सिटी में अभी नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी और ग्लोबोटिया विश्वविद्यालय चल रहे हैं। इसके अलावा नरमी मॉजी, जेबीएम समेत कई शैक्षणिक संस्थानों ने जमीन ली है।

एमएसएमई सेक्टर खाली हाथ रहने से मायूस : जेवर एयरपोर्ट की वजह से अगर किसी के हाथ लॉटरी लगी है तो वो यमुना सिटी है। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने यहां बड़ी परियोजनाओं को खूब जगह दी है लेकिन एमएसएमई इकाइयों को जमीन का इंतजार है। इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, लघु उद्योग भारती जैसे संगठनों ने 250 एकड़ जमीन पर एमएसएमई पार्क का आवंटन दिया है।

■ रेडोमंड कपड़ों के उद्यमी ऋषभ जैन ने कहा कि पहले लॉटरी सिस्टम से भूखंड मिलते थे। इस वजह से 18-20 हजार रुपये वर्गमीटर में मिल जाते थे। बिडिंग शुरू होने के बाद से उसी भूखंड की कीमत 40 से 50 हजार रुपये पहुंच गई है। इतनी महंगी जमीन खरीदने में ही पुंजी लग जाएगी तो फैक्टरी कैसे चलाएंगे।